एक अनोखा युद्ध : भीमाकोरेगाँव

अधिकतर लोगों ने 300 फिल्म तो देखी ही होगी ! लेकिन कभी अपने भारतीय इतिहास के ऐसे ही युद्ध के बारे मे पढ़ा है??

दुनिया के इतिहास में ऐसा युद्ध न कभी किसी ने पढ़ा होगा ना ही सोचा होगा, जिसमे विशाल फ़ौज का सामना महज 500 लोगों के साथ हुआ था और जीत किसकी होती है ?

उन 500 सूरमाओं की !

यह युद्ध भीमा कोरेगांव का युद्ध के नाम से जाना जाता है !

लेकिन भारतीय जातिवादी इतिहास ने इस युद्ध और उन 500 सूरमाओ की वीरता को कहीं स्थान नहीँ दिया !

इसका कारण था कि ये 500 सैनिक जाति से अछूत और महार रेजीमेंट के सिपाही थे !

इतिहास गवाह है, दुनिया में जहाँ कहीं भी कोई क्रांति हुई है, वो सत्ता या सत्ता विरोधियों ने नहीँ बल्कि हमेशा शोषितों ने की है !

और भारत में भी इस शोषित तबके ने जब हथियार उठाया है, सारा इतिहास बदलकर रख दिया !

चाहे लक्ष्मीबाई कि जगह युद्ध लड़ने वाली झलकारी बाई हो, महार रेजीमेंट हो या फिर विद्रोह आक्रोश की किंवदंती फूलन देवी हो ! फूलन देवी अगर दलित नहीँ होती तो आज विद्रोही महिलाओं में सबसे ऊपर होती, किताबों में शौर्य गाथा पढ़ाई जाती और उनका स्थान भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद के साथ होता ! लेकिन भारतीय जातिवादी समाज ने इस विद्रोही को हाशिये पर ढकेल दिया !

अब बात इस युद्ध की

कोरेगांव महाराष्ट्र प्रदेश के अन्तर्गत पूना जनपद की शिरूर तहसील में पूना नगर रोड़ पर भीमा नदी के किनारे बसा हुआ एक छोटा सा गांव है, नदी के किनारे बसा होने के कारण ही इसको भीमाकोरेगांव कहते हैं !

पेशवाई शासकों का अमानवीय अत्याचार

इनके शासन में अछूतों पर अमानवीय अत्यारों की बाढ थी !

1= पेशवाओं के शासन काल में यदि कोई सवर्ण हिन्दू सड़क पर चल रहा हो तो वहां अछूत को चलने की आज्ञा नहीं होती थी ताकि उसकी छाया से वह हिन्दू भ्रष्ट न हो जाय ! अछूत को अपनी कलाई या गले में निशान के तौर पर एक काला डोरा बांधना पडंता था ! ताकि हिन्दू भूल से स्पर्श न कर बैठे !

2= पेशवाओं की राजधानी पूना में अछूतों के लिए राजाज्ञा थी कि वे कमर में झाड़ू बांधकर चलें ताकि चलने से भूमि पर उसके पैरों के जो चिन्ह बनें उनको उस झाड़ू से मिटाते जायें, ताकि कोई हिन्दू उन पद चिन्हों पर पैर रखने से अपवित्र न हो जाय ! पूना में अछूतों को गले में मिट्टी की हाड़ी लटका कर चलना पड़ता था ताकि उसको थूकना हो तो उसमें थूके ! क्योंकि भूमि पर थूकने से यदि उसके थूक से किसी हिन्दू का पांव पड़ गया तो वह अपवित्र हो जायेगा !

पेशवाओं के घोर अत्याचारों के कारण महारों में अन्दर ही अन्दर असन्तोष व्याप्त था ! वे पेशवाओं से इन जुल्मों का बदला लेने के लिए मौके की तलाश में थे ! जब महारों का स्वाभिमान जागा,तब पूना के आस-पास के महार लोग पूना आकर अंग्रेजों की सेना में भर्ती हुए !

कोरेगांव की लड़ाई का गौरवशाली इतिहास=

अंग्रेजों की बम्बई नेटिव इंफैंट्री (महारों की पैदल फौज) फौज अपनी योजना के अनुसार 31दिसम्बर 1817 ई. की रात को कैप्टन स्टाटन शिरूर गांव से पूना के लिए अपनी फौज के साथ निकला ! उस समय उनकी फौज सेकेंड बटालियन फ़र्स्ट रेजिमेंट में मात्र 500 महार थे ! 260 घुड़सवार और 25 तोप चालक थे ! यह फौज 31दिसम्बर 1817 ई.की रात में 25 मील पैदल चलकर दूसरे दिन प्रात=8 बजे कोरेगांव भीमा नदी के एक किनारे जा पहुंची !

1जनवरी सन 1818 ई.को बम्बई की नेटिव इंफैन्टरी फौज(पैदल सेना) अंग्रेज कैप्टन स्टाटन के नेतृत्व में नदी के एक तरफ थी!

दूसरी तरफ बाजीराव की विशाल फौज दो सेनापतियों रावबाजी और बापू गोखले के नेतृत्व में जिसमें दो हजार अरब सैनिक भी थे, नदी के दूसरे किनारे पर काफी दूर-दूर तक फैले हुए थे !

1जनवरी सन 1818को प्रात=9.30बजे युद्ध शुरू हुआ !

भूखे-थके महार अपने सम्मान के लिए बिजली की गति से लड़े ! अपनी वीरता और बुद्धि बल से करो या मरो का संकल्प के साथ समय-समय पर व्यूह रचना बदल कर बड़ी कड़ाई के साथ उन्होंने पेशवा सेना का मुकाबला किया ! युद्ध चल रहा था ! कैप्टन स्टाटन ने पेशवाओं की विशाल सेना को देखते हुए अपनी सेना को पीछे हटने के लिए कहा ! महार सेना ने अपने कैप्टन के आदेश पर कहा, हमारी सेना पेशवाओं से लड़कर ही मरेगी किन्तु उनके सामने आत्म समर्पण नहीं करेगी, न ही पीछे हटेगी, हम पेशवाओं को पराजित किए बिना नहीं हटेंगे ! यह महारों का आपसे वादा है !

महार सेना अल्पतम में होते हुए भी पेशवा सेनिकों पर टूट पड़े, तबाई मच गयी ! लड़ाई निर्णायक मोड पर थी ! पेशवा सेना एक-एक कदम पीछे हट रही थी ! लगभग सांय 6 बजे महार सैनिक नदी के दूसरे किनारे पेशवाओं को खदेड़ते-खदेड़ते पहुंच गये और पेशवा फौज लगभग 9 बजे मैदान छोड़कर भागने लगी !

इस लड़ाई में मुख्य सेनापति रावबाजी भी मैदान छोड़ कर भाग गया परन्तु दूसरा सेनापति बापू गोखले को भी मैदान छोड़कर भागते हुए पकड़ कर मार गिराया गया ! इस प्रकार लड़ाई एक दिन और उसी रात लगभग 9.30 बजे लगातार 12 घंटे तक लड़ी गयी जिसमें महारों ने अपनी शूरता और वीरता का परिचय देकर विजय हांसिल की !

महारों की इस विजय ने इतिहास में जातीय जुल्म करने वाले पेशवाओं के पेशवाई शासन का हमेशा के लिए खात्मा कर दिया !

कोरेगांव का क्रान्ति स्तम्भ=

कोरेगांव के मैदान में जिन सैनिकों ने वीरता से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त किया, उनकी याद में अंग्रेजों ने सन 1822 ई.में कोरेगांव में भीमा नदी के किनारे काले पत्थरों का क्रान्ति स्तम्भ का निर्माण किया ! सन 1822 ई. में बना यह स्तम्भ आज भी महारों की वीरता की गौरव गाथा गा रहा है !

इस स्तम्भ को हर साल 1 जनवरी को देश की सेना अभिवादन करने जाती थी ! इसे सर्व प्रथम महार स्तम्भ के नाम से सम्बोधित किया जाता था ! बाद में इसे विजय या फिर जय स्तम्भ के नाम से जाना गया ! आज इसे क्रान्ति स्तम्भ के नाम से जाना जाता है, जो सही दृष्टि में ऐतिहासिक क्रान्ति स्तम्भ है !

यह स्तम्भ 25 गज लम्बे 6गज चौडे और 6गज ऊंचे एक प्लेट फार्म पर स्थापित 30 गज ऊंचा है !

कोरे गांव के युद्ध में 20 महार सैनिक और 5 अफसर शहीद हुए !

शहीद हुए महारों के नाम, उनके सम्मान में बनाये गये स्मारक पर अंकित हैं ! जो इस प्रकार हैं-

1 गोपनाक मोठेनाक
2 शमनाक येशनाक
3 भागनाक हरनाक
4 अबनाक काननाक
5 गननाक बालनाक
6 बालनाक घोंड़नाक
7 रूपनाक लखनाक
8 बीटनाक रामनाक
9 बटिनाक धाननाक
10 राजनाक गणनाक
11 बापनाक हबनाक
12 रेनाक जाननाक
13 सजनाक यसनाक
14 गणनाक धरमनाक
15 देवनाक अनाक
16 गोपालनाक बालनाक
17 हरनाक हरिनाक
18 जेठनाक दीनाक
19 गननाक लखनाक

लड़ाई में महारों का नेतृत्व करने वालों के नाम निम्न थे-

रतननाक
जाननाक
और भकनाक आदि

इनके नामों के आगे सूबेदार, जमादार, हवलदार और तोपखाना आदि उनके पदों का नाम लिखा है !

संग्राम में जख्मी हुए योद्धाओं के नाम निम्न प्रकार हैं-

1 जाननाक
2 हरिनाक
3 भीकनाक
4 रतननाक
5 धननाक

आज भी महार रेजीमेंट के सैनिकों के बैरी कैप पर कोरेगांव की लड़ाई की याद में बनाए इस स्तम्भ की निशानी को अंकित किया जाता है !

1851 में दुबारा एक सैन्य समारोह में अँग्रेजी सरकार ने शहीद हुऐ सैनिकों को मेडल देकर सम्मानित किया !

बाबासाहेब डा. आम्बेडकर हर साल 1जनवरी को अपने शहीद हुए पूर्वजों को श्रद्धार्पण करने कोरेगांव जाते थे !

लेकिन इस बार भीमा कोरेगांव युद्ध के 200 साल पूरे होने पर हजारो लोग कोरेगांव पहुंच रहे थे ! उन्हें रोकने की कोशिश की गयी ! गाडियो में तोड़ फोड़ कि गयी लगभग 40 गाडियो में आग लगायी गयी !

कोरेगांव शौर्य पर बनी फिल्म '500 Battle of Koregaow' फिल्म को बने 4 साल हो गये लेकिन चार साल से इसे रिलीज नही होने दिया जा रहा !

आखिर कौनसा डर है ? डर है ना कि फिल्म रिलीज़ हुई तो चाशनी में लिपटा हुआ पेशवाई वीरता का झूठा इतिहास बेनकाब हो जायेगा ! और साथ ही इनके अमानवीय अत्याचारों का इतिहास और उसके खिलाफ हुई ये निर्णायक लड़ाई कहीं फिर से अछूतों के सोये जमीर को जिंदा न कर दे !

लेकिन कब तक सोये रहेंगे ? उन्हें दबाया जाता रहा तो

दलित सँघर्ष आगामी दिनों में और निखरेगा।

- कांति शिखा

भीमा कोरेगांव के युद्ध के बारे में कुछ तथ्य जिन पर हम शायद ही बात करते हैं

यह युद्ध ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा नहीं बल्कि ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा लड़ा गया था, क्यों कि तब तक भारत को क्राउन ने अपने अधिकार क्षेत्र में नहीं लिया था । यह युद्ध ब्रिटेन ने नहीं ईस्ट इंडिया कम्पनी ने जीता था । इस युद्ध का नेतृत्व ईस्ट इंडिया कम्पनी की तरफ से कैप्टन फ्रांसिस एफ स्टाउटन ने किया था । उस समय उसकी सेना में 300 राजपूत सवार, 500 पदाति सैनिक जिसमे महार, मराठे , मुस्लिम और राजपूत सैनिक शामिल थे। यहां तक कि कुछ यहूदी भी सम्मिलित थे । महारों की केवल 2 कम्पनी थी। कम्पनी की नफरी यानी संख्याबल के अनुसार यह संख्या 240 तक होती हैं । इस सेना में 24 यूरोपियन सैनिक और 4 सैनिक नेटिव मद्रास आर्टिलरी के थे । इसमें 2 यूरोपीय अफसर भी थे ।

दूसरी तरफ़ पेशवा की सेना में कुल 2000 सवार और पदाति सैनिक थे जिनमें मुख्यत: पठान, गोसाईं/ पिंडारी आदि अस्थायी सैनिक थे । यह पेशवा सेना का अग्रिम दल था । पेशवा की मुख्य सेना जो 25000 की थी, वह कोरेगांव 15 मील दक्षिण में थी। असल युद्ध पेशवा के सेनापति अप्पा देसाई और त्रिम्बक ही डेंगले के नेतृत्व में लड़ा गया था । यह कहना कि 25000 की पेशवा की फौज से 500 महार सैनिक लड़े ऐतिहासिक तथ्यों से उसकी पुष्टि नहीं होती है। युद्ध 500 बनाम 2000 की सेना के साथ हुआ था । यह 2000 अग्रिम दस्ता था जब कि 25000 की सेना 15 मील दूर फूलशहर में थी।

पेशवा की सेना जो महारों या कम्पनी की सेना के 500 सैनिकों के साथ जूझ रही थी, का मोर्चा छोड़ने का कारण यह था कि इंडिया कम्पनी के जनरल जोसफ स्मिथ जो इस अभियान का नेतृत्व कर रहा था, ने फूलशहर पर जहां पेशवा की 25000 संख्याबल वाली सेना थी, पर हमला कर दिया । कुछ इतिहासकार यह बताते हैं कि हमले की खबर मिलते ही जो 2000 के संख्याबल की सेना अग्रिम दस्ते के रूप में कोरेगांव में कम्पनी टुकड़ी से जूझ रही थी, को अपनी सहायता के लिये वापस बुला लिया। उस समय कम्पनी की सेना में भारी तोपखाना भी था जिसका नेतृत्व ब्रिगेडियर प्रिटज़लर कर रहा था । पेशवा के पास तोपखाने के मुक़ाबला करने के लिये सक्षम साधन नहीं थे ।

इस युद्ध के बाद अंग्रेजों (ईस्ट इंडिया कम्पनी) ने अपनी सेना में महारों की भर्ती प्रतिबंधित कर दी । यह प्रतिबंध 1820 से 1857 तक जब तक कम्पनी का राज रहा तब तक लागू रहा । 1857 के विप्लव के बाद कम्पनी की सेना ब्रिटिश राज की सेना बन गयी लेकिन तब भी महारों की भर्ती पर प्रतिबंध 1892 तक लगा रहा । इस प्रतिबंध का कारम अविश्वसनीय और अनियंत्रित मनोवृत्ति का होना बताया गया है।

इस युद्ध के अतिरिक्त महार पहले भी युद्ध लड़ चुके थे। महार सैनिक, शिवाजी, राजाराम और पेशवा की अनेक सैन्य अभियानों में रहे हैं। यह युद्ध भी कोई जातीय युद्ध नहीं बल्कि एक राज्य का दूसरे राज्य के विस्तार का प्रतिरोध युद्ध था। उदाहरण के लिये राजाराम के समय हुए रायगढ़ अभियान में रैनक महार ने युद्ध का नेतृत्व किया था। 1795 में हुए खारडा के युद्ध मे जिसका नेतृत्व पेशवा सेनापति परशुराम पटवर्धन ने किया था, में महार योद्धा श्रीधनक महार ने परशुराम पटवर्धन की जान बचायी थी।

पुणे के युद्ध मे जिसमे बाजीराव पेशवा द्वीतीय की सेना कम्पनी की सेना से पराजित हुयी थी में खुद 800 महार सैनिक थे जिनमें दो महार सरदार भी थे।

कोरेगांव में जहां यह युद्ध हुआ था वहां एक स्मारक भी अंग्रेजों ने बनवाया है। उसी जगह पर महार समाज के लोग अपने शहीद सैनिकों को याद करने के लिये भी हर साल एकत्र होते हैं। डॉ बीआर अम्बेडकर भी एक बार वहां श्रद्धांजलि अर्पित करने पहुंचे थे। वही परम्परा आज तक चल रही है। यह दो सेनाओं के विरुद्ध हुयी जंग थी। एक मराठा राज और दूसरे ईस्ट इंडिया कम्पनी। ईस्ट इंडिया कम्पनी में लड़ने वाले सभी अंग्रेज़ नहीं थे और न ही सभी यूरोपियन ही थे। उनके सैनिक अधिकतर भारतीय थे जिन्हें वे नेटिव यानी देशी कहते थे। 1857 तक कम्पनी की सेना की नफरी यानी संख्याबल में यह अनुपात 20 बनाम 80 का था। 1857 के सैन्य विद्रोह हो जाने के और भारत को सीधे ब्रटिश ताज क्राउन के अंतर्गत ले लेने के बाद 1858 में जब महारानी की उद्घोषणा हुयी तो भारतीय सेना का विधिवत गठन प्रारम्भ हुआ । लेकिन कम्पनी काल के समय मे भी जो रेजिमेंट गठित हुयी थी वे भी जारी रहीं। लॉर्ड क्लाइव के समय से ही जब उसने 1757 में प्लासी के युद्ध मे सिराजुद्दौला को पराजित कर के बंगाल की दीवानी हथिया ली थी तो, भारत के भूभाग पर कब्ज़ा करने का जो चस्का लगा वह 1856 तक अवध के अधिग्रहण तक कायम रहा । अंग्रेज़ो ने कहीं रिश्वत दे कर तो कहीं युद्ध कर तो कहीं डॉक्ट्रिन ऑफ लेप्स, (असल वारिस न होने पर गोद लिये सन्तान की विरासत को न मानना) के कुटिल चाल से भारत के अधिसंख्य भूभाग पर कब्ज़ा कर लिया । 1858 के बाद यह प्रथा रोक दी गयी और जो देशी रियासतें बच गयी थीं वे 1947 तक बची रहीं।

यह कहना कि यह अंग्रेज़ो की विजय का जश्न है उचित नहीं है। यह कोई जातीय युद्ध भी नहीं था । लेकिन जब एक दबी कुचली और सामाजिक रूप से निम्न समझी जाने वाली महार जाति के सैनिकों को जब उन पर अत्याचार करने वाले मराठा और वह भी पेशवा के सैनिकों पर विजय प्राप्त करने का अवसर मिला तो इस से उन्होंने अपने जातीय स्वाभिमान से जोड़ कर देखा । यह भारतीय परंपरा में नयी बात नही है । आज भी परशुराम ब्राह्मण स्वाभिमान, महाराणा प्रताप क्षत्रिय स्वाभिमान, शिवाजी मराठा स्वाभिमान, गुरु गोविंद सिंह सहित अन्य सिख गुरु भी अपने अपने समाज और धर्म के लिये प्रेरणा के प्रतीक बने हैं। जैसे आज डॉ बीआर अम्बेडकर दलित चेतना और दलित अस्मिता के प्रतीक बन चुके हैं। हम एक व्यक्तिपूजक समाज है । हम एक ठीहा खोजते हैं और एक प्रभा मंडल गढ़ते हैं जिनसे हम प्रेरित होते हैं। गज़ब का अतीत मोह है हम में। यह अतीत मोह कभी कभी हमारे समाज को अन्य से अलग भी कर देता है। लेकिन शीतताप नियंत्रित आरामदेह कमरे के समान हम उसी माज़ीखाने में ही आनन्द की पिनक में रहते हैं। महार को भी उनके स्वाभिमान और प्रतीकों के साथ जीने और उन पर गर्व करने का उतना ही अधिकार है जितना सभी जाति, धर्म और समाज को। कोरेगांव के पीछे यही भाव रहा होगा ।

आज भी महार रेजिमेंट है । 1941 में जब द्वीतीय विश्व युद्ध हो रहा था तो अम्बेडकर उस समय वायसराय की कॉउंसिल में थे। उनके प्रयासों से महार रेजिमेंट का गठन हुआ था । लेकिन ऐसा बिल्कुल भी नहीं था कि इस रेजिमेंट में केवल महार जाति के ही लोग भर्ती होते हों। इस रेजिमेंट में सभी जाति और धर्म के लोग भर्ती होते हैं । यह एक इन्फैंट्री रेजीमेंट है जिसमे 19 बटालियन है। इनका बोधशब्द (motto) यश सिद्धि और युद्धघोष (war cry) ' बोलो हिंदुस्तान की जय % है। यह मोटो और युद्धघोष 1941 के समय ही तय किया गया था और आज भी वही है। इस रेजिमेंट ने 1947/48, 1965 और 71 के पाकिस्तान के विरुद्ध और 1962 के चीन के विरुद्ध युद्धों में भाग लिया था । रेजिमेंट को 1 परम वीर चक्र, 4 महा वीर चक्र, 29 वीर चक्र, 1कीर्ति चक्र, 12 शौर्य चक्र, 22 विशिष्ट सेवा मेडल और 63 सेना मेडल मिल चुके हैं।

शहीद अब्दुल हमीद जिनको 1965 के भारत पाक युद्ध मे पश्चिमी सीमा पर स्थित असल उत्तर के मोर्चे पर अदम्य वीरता प्रदर्शित करने के लिये मरणोपरांत परम वीर चक्र से सम्मानित किया गया था वे महार रेजीमेंट के ही थे। भारतीय सेना के दो सेनाध्यक्ष, जनरल के सुंदर जी और जनरल केवी कृष्णराव भी इसी महार रेजिमेंट के ही थे ।

अपना अपना समाज और अपने अपने जाति, धर्म और की शौर्य गाथा हर युग मे रही है और रहेगी। जब जब भी परिभाषायें एक ही मानसिकता से गढ़ी और माने जाने की ज़िद की जाएगी तो समाज मे द्वंद्व होगा ही। यह द्वंद्व भी सनातन है और समाज भी। अतीतमोह अक्सर त्रासद होता है। **-सम्पादक**